MR. SPEAKER : That question is coming up: we cannot have it twice.

SHRI JYOTIRMOY BOSU : I am just making a submission. This is an important issue.

MR. SPEAKER : Every issue is important.

SHRI JYOTIRMOY BOSU : I do not know from where we will get the money to run the Lok Sabha if our economy is handled in this manner. It used to be a leading national bank....

MR SPEAKER : No, No: the matter is going to come up. It is not on the Agenda now: it will come up at the appropriate stage. Not Now.

SHRI JYOTIRMOY BOSU : You do not understand the seriousness of the matter.

MR. SPEAKER : I do understand. I can only have my understanding and not your understanding.

SHRI JYOTIRMOY BOSU : The two erstwhile Reserve Bank Governors and the Secretaries of the Banking Department under orders of the erstwhile Prime Minister's son gave an overdraft to the Kapadias by committing a fraud on the bank.

MR. SPEAKER : The matter is coming up. We cannot have it twice over.

SHRI JYOTIRMOY BOSU : In what form?

MR. SPEAKER : You will know it from the Secretary. I cannot answer it just now because I do not remember it.

SHRI JYOTIRMOY BOSU : I have made a mention yesterday. I waited for a further communication from you. Surely you take up other issues which have no relation with the country's economy or matters which are not so important. I beg of you not to throttle this serious issue where a premier nationalised bank has lost its capital base becuause of this overdraft.

MR. SPEAKER : If you make the submission now, thereafter the question will become unnecessary.

SHRI JYOTIRMOY BOSU : As you deire, I will keep quiet.

12.06 hrs.

RE. CALLING ATTENTION NOTICES.

(PROCEDURE)

श्री निर्मल चन्द्र जैन (सिवनी) : मुझे यह निवेदन करना है कि आज आप ने एक ध्यान आकर्षण प्रस्ताव स्वीकृत किया है जोकि कानपुर की कपड़ा मिलों के दंगों के सम्बन्ध में है। मैंने इस सम्बन्ध में गृह विभाग के लिए और श्रम विभाग के लिए प्रश्न दिये थे लेकिन वे अस्वीकृत कर दिये गये थे। उस के बाद मैंने एक पत्र आप को लिखा था और उसमें यह लिखा था कि इस से श्रम विभाग की प्रतिष्ठा गिरती है। यह शान्ति व्यवस्था का भी प्रश्न है। इसलिए शान्ति व्यवस्था को बनाए रखने के लिए इस प्रश्न के लिए अनुमति दी जाए परन्तु उस का उत्तर अभी तक मुझे नहीं मिला है। यह ध्यान आकर्षण प्रस्ताव उसी संदर्भ का है। यदि मेरे प्रश्न को स्वीकार कर लिया जाता तो बहुत सी जानें जो गई हैं, वे नहीं जातीं। ये जो अलग अलग मापदंड बनाए जा रहे हैं, उस के बारे में मैं आप का ध्यान विशेष रूप से आकर्षित करना चाहता हूं।

श्री मनोहर लाल (कानपुर) : अध्यक्ष महोदय, यह जो ध्यान आकर्षण प्रस्ताव आया है, उस के लिए जो हमने कालिंग एटेंशन का नोटिस दिया था, उस में हमने साफ़ लिखा था कि श्रम विभाग का जो फेल्योर है उस की वजह से वहां इतनी जानें गई हैं। इस में श्रम विभाग को निकाल दिया गया है और होम डिपार्टमेंट कर दिया गया है। जो कालिंग एटेंशन आप ने स्वीकार किया है, उसमें हमने साफ़ लिखा है कि श्रम विभाग का फेल्योर रहा है जिस की वजह से इतनी जानें गई हैं। साल भर से झगड़ा चल रहा था कानपुर

[श्री मनोहर लाल]

स्वदेशी मिल में और उस को न निपटाने की वजह से इतनी जानें गई हैं । अध्यक्ष महोदय, यह बहुत ही सीरियस मैटर है । . . . (व्यवधान. .)

MR. SPEAKER : I am on my legs. Anybody wanting to discuss anything about questions may kindly come over to my Chamber and we will discuss it. Here I cannot give you answers becuase I do not remember what happened to your question. Therefore, if you want to discuss anything you are always welcome to my Chamber for discussion. If necessary, we can revise it. Certainly we will do that but here I am not in a position to give answers because many of the things are decided by the Secretary and, even if I decide, I cannot remember t. Therefore, there is no point in your raising it here at all.

श्री मनोहर लाल : यह सवाल नहीं है । हम ने साफ़ लिखा है लेबर डिपार्टमेंट के बारे में कि उन से वक्तव्य मांगा जाए लेकिन आज जो जवाब दिया जा रहा है, वह गृह मंत्रालय दे रहा है । इस में श्रम विभाग बिल्कुल फेल्योर रहा है । इस को आप देख लीजिए, हम ने साफ़ लिखा है । . . (व्यवधान) . . . .

श्री रामनरेश कुशवाहा (सलेमपुर) : मेरा व्यवस्था का प्रश्न है । मैंने एक प्रश्न दिया था, जिस का मुझे लिखित उत्तर मिला है । मेरा जो प्रश्न था, आप के कार्यालय में जो प्रश्न विभाग है, उस ने मेरे सवाल की पूरी भावना को ही बदल दिया है । प्रश्न हमारा यह था कि क्या गृह मंत्री जी यह बताने की कृपा करेंगे कि गत तीस सालों में केन्द्रीय सरकार के कितने कर्मचारियों को हिन्दी पढ़ाई गई तथा कितने कर्मचारी अभी तक हिन्दी नहीं जानते ? हमारे प्रश्न के तीस वर्ष को बदल कर तीन वर्ष कर दिया गया और इस तरह हमारे प्रश्न की पूरी भावना को ही मार दिया गया । इन तीस वर्षों में सरकारी कर्मचारी हिन्दी पढ़ते रहे है और जब इतने सारे कर्मचारियों ने हिन्दी पढ़ ली है फिर भी हिन्दी में काम नहीं होता है । यह प्रश्न की भावना थी जिसको बदल दिया गया ।

MR. SPEAKER : It is better that you come and discuss. If you ask information for the last 30 years, that question will be disallowed. The Rule provides that the question which cannot be easily answered will not be answered. Nobody can collect information for the last 30 years. Probably the office has helped you by reducing it to three years. If you do not want, you leave the question because 30 years will not be allowed at all.

श्री रामनरेश कुशवाहा : इस प्रश्न के द्वारा हमारा कहना यह था कि पिछले तीस वर्षों में 80 परसेंट सरकारी कर्मचारी हिन्दी पढ़ चुके हैं, फिर अंग्रेजी में काम क्यों हो रहा है ? इसको बदल दिया गया ।

MR. SPEAKER : Anybody can come to me and discuss with me.

12.11 hrs.

PAPER LAID ON THE TABLE

ANNUAL REPORT OF ALL INDIA INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES NEW DELHI FOR (1976-77)

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HEALTH AND FAMILY WELFARE (SHRI JAGDAMBI PRASAD YADAV) : I beg to lay on the Table a copy of the Annual Report (Hindi and English versions) of the All India Institute of Medical Sciences, New Delhi, for the year 1976-77 under Section 19 of the All India Institute of Medical Sciences Act, 1956.

Placed in the Library. See No. LT-1296/77]